Doon Darpan 23 July, 2004

अरणय भवन में क्रमिक अनशन करते वन विकास निगम कर्मचारी।

'परिवर्तन' ने समेटा है पहाड़ की पीड़ा को

व्यथा पहाड़ की, मन प्रवासी उपजा 'परिवर्तन'

देहरादून, २२ जुलाई (एजेंसी)। गढ़वाल विश्वविद्यालय की पूर्व कुलपति डा. सुशीला डोभाल ने कहा कि उत्तरांचल का उल्लेख सहित्य में होता रहा है मगर विदेश मे रहकर अपनी संस्कृति को सहित्य में समेटना बेहद मुश्किल है इस मुश्किल को 'परिवर्तन' की लेखिका अर्चना पैन्यूली ने आसान कर दिखाया है।

इंस्टीट्यूट ऑफ टैक्नोलॉजी एंड मैनेजमेंट के सभागार में धाद महिला मंच द्वारा अर्चना पैन्यूली की पुस्तक परिवर्तन का विमोचन हुआ। इस अवसर पर बतौर मुख्य अतिथि डा. सुशीला डोभाल ने कहा कि उक्त उपन्यास चार पीढ़ीयों के विचार में आये बदलावों को दर्शाती तथा पहाड़ से हो रहे पलायन पर भी गहरी चोट करती है। उन्होंने कहा कि उपन्यास पहाड़ में रह रहे परिवार को धरातल छुआ है।

कार्यक्रम में पदम श्री लीला धर जगुड़ी ने कहा कि विदेश में बैठे हुये अपनी संस्कृति को उपन्यास के माध्यम से पढ़ावा देना बहुत ही अच्छां प्रयास है। उपन्यास के बारे में विचार प्रकट करते हुये उन्होंने कहा कि कहानी पहाड़ में बस रहे परिवार का मार्मिक चित्रण करती है तथा धरातल पर कहानी का बखान करती है। पश्चिमी सभ्यता का पहाड़ की संस्कृति का असर व पलायन पर भी सफलता पूर्वक बखान करती है उपन्यास की लेखिका अर्चना पैन्यूली ने कहा कि पहाड़ की महिलाओं का जीवन पूर्णतः संघर्ष मे ही बितता है। खेती करना जंगल में लकड़ी काटकर लाना पशु-पालन करना तथा गृहस्थी के अन्य सभी कार्य पहाड़ की महिलाओं के जीवन के महत्वपूर्ण अंग होते है। संघर्षो से जूझना यहां की महिलाओं की दिनचर्या बन गयी है। उन्होंने कहा कि विदेश में रहते हुये भी उनका मन हमेशा पहाड़ी संस्कृति में ही रमा रहा, लेकिन संस्कृति में पश्चिमीकरण का समावेश और उससे होने वाला परिवर्तन उनके दिल को कचौटता रहा। परिवर्तन अवश्यक तो है। मगर उसके लिए अपनी संस्कृति को भुलाना उचित नही।

इस अवसर पर वरिष्ठ पत्रकार चारू चंद्र चन्दोला, धाद की संस्कृति की संरक्षिका वीणा-पाणी जोशी, एम.के.पी. (पीजी) कॉलेज की पूर्व प्रधानाचार्य डा. मधु शर्मा, वरिष्ठ पत्रकार विरेन्द्र पैन्युली आदि अन्य साहित्यकार भी उपस्थित थे।